सरिता गृहशोभा मुक्ता

'नारायणी' पुरस्कार

श्रीमती कुसुम नारायण (1931-2015) ने 'नारायणी' के नाम से 150 से ज्यादा कहानियां हिंदी की जानीमानी पत्रिकाओं में लिखीं. 3 उपन्यास और 5 कहानी संग्रह भी प्रकाशित हुए. अधिकतर कहानियां दिल्ली प्रैस की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं.

पारिवारिक जिम्मेदारियों से घिरी 'नारायणी' बरसों से मन में उमड़ती कहानियों को 40 की उम्र के बाद ही पन्नों पर अभिव्यक्त कर पाईं. उन का मानना था कि कहानी जितनी सहज से सहज होगी, उतनी ही जीवंत होगी, जीवन की धड़कन की तरह. उन की कहानियां आम लोगों के जीवन की घटनाओं व रिश्तेनातों से जुड़ी होती थीं, मगर कहानियों में एक गहरा संदेश अवश्य छिपा होता था.

दिल्ली प्रैस की पत्रिकाएं श्रीमती कुसुम नारायण के परिवार के अनुरोध पर उन की स्मृति में सरिता, गृहशोभा, मुक्ता 'नारायणी पुरस्कार' की शुरुआत करने जा रही हैं जो हर साल दिसंबर माह में दिल्ली प्रैस द्वारा 2 महिला कहानीकारों को प्रदान किया जाएगा. पुरस्कृत कहानियों के चयन के लिए दिल्ली प्रैस वार्षिक प्रतियोगिता का आयोजन करेगा. प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए दिल्ली प्रैस को 1 दिसंबर, 2016 से 28 फरवरी, 2017 के बीच कहानियां भेजी जा सकती हैं, जो फरवरी से दिसंबर, 2017 के बीच प्रकाशित की जाएंगी. कहानी का विषय उद्देश्यपूर्ण व सामाजिक होना चाहिए.

नारायणी के परिवार द्वारा दिया जाने वाला यह पुरस्कार प्रथम वर्ष 1,00,000 रुपए का होगा और 2 लेखिकाओं को 50,000-50,000 रुपए प्रदान किए जाएंगे. 'नारायणी पुरस्कार' के अंतर्गत राशि के साथसाथ एक प्रशस्तिपत्र भी प्रदान किया जाएगा.

प्राप्त रचनाएं साधारण अंकों में ली जा सकती हैं और प्रतियोगिता में नहीं भेजी गईं पर फरवरी 2017 से दिसंबर 2017 के बीच प्रकाशित सभी अन्य कहानियों पर भी पुरस्कार के लिए विचार किया जा सकता है. कहानी के पहले पृष्ठ पर 'नारायणी पुरस्कार' शब्द लिख हों. इस बारे में संपादक का निर्णय अंतिम होगा.

कहानियां इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रैस, ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
ईमेल के लिए पीडीएफ फाइल बनाएं और
फाइल में ही पूरा जीवन परिचय भेजें:
केवल इस पुरस्कार के लिए आईडी है:
sampadak@delhipress.biz